वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2023 (एमपीआई)

संदर्भ: संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और ऑक्सफोर्ड गरीबी और मानव विकास पहल (ओपीएचआई) ने संयुक्त रूप से वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) जारी किया है।

भारत विशिष्ट निष्कर्ष

- संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2023 में भारत 142.86 करोड़ लोगों की आबादी के साथ चीन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया।
- 'भारत में गरीबी में उल्लेखनीय रूप से कमी दिखी। यहां 15 वर्षों (2005-06 से 2019-21) की अवधि के भीतर 41.5 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले।
- भारत में बहुआयामी गरीबी का अनुभव करने वाले छह में से पांच व्यक्ति निचली जनजातियों या जातियों से सम्बन्धित हैं।
- **अनुसूचित जनजाति समूह:**
  - यह समूह भारत की जनसंख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत है।
  - 129 मिलियन जनसंख्या में से , 65 मिलियन लोग बहुआयामी गरीबी में रहते हैं।
  - भारत में बहुआयामी गरीबी में रहने वाले सभी व्यक्तियों का लगभग छठा हिस्सा अनुसूचित जनजातियाँ हैं।
- **अनुसूचित जाति समूह:**
  - लगभग 16.6% प्रतिशत जनसंख्या, या 283 मिलियन लोगों में से 94 मिलियन, बहुआयामी गरीबी में रहते हैं।
- **अन्य पिछड़ा वर्ग:**
  - अन्य पिछड़ा वर्ग की , 27.2 प्रतिशत, या 588 मिलियन लोगों में से 160 मिलियन, बहुआयामी गरीबी में रहते हैं।
- **महिला प्रधान परिवार:**
  - भारत में, लगभग 12 प्रतिशत जनसंख्या, जो 162 मिलियन लोगों के बराबर है, महिलाओं की अध्यक्षता वाले घरों में रहती है।

The Global MPI Indicators Mapped to the SDGs

Dimension	Indicator	Related SDG
Health	Nutrition	SDG 2 (Zero Hunger)
	Child Mortality	SDG 3 (Health and Well Being)
Education	Years of Education	SDG 4 (Quality Education)
	School Attendence	SDG 4 (Quality Education)
Living Standard	Cooking Fuel	SDG 7 (Affordable and Clean Energy)
	Sanitation	SDG 6 (Clean Water and Sanitation)
	Drinking Water	SDG 6 (Clean Water and Sanitation)
	Electricity	SDG 7 (Affordable and Clean Energy)
	Floor	SDG 11 (Sustainable Cities and Communities)
	Assets	SDG 1 (No Poverty)

वैश्विक निष्कर्ष

- रिपोर्ट के अनुसार भारत सहित 25 देशों ने 15 वर्षों में अपने वैश्विक एमपीआई मूल्यों (गरीबी) को सफलतापूर्वक आधा कर दिया, यह आंकड़ा इन देशों में तेजी से प्रगति को दर्शाता है। इन देशों में कंबोडिया, चीन, कांगो, होंडुरास, भारत, इंडोनेशिया, मोरक्को, सर्बिया और वियतनाम शामिल हैं।
- वैश्विक स्तर पर अध्ययन किए गए 1.3 अरब बहुआयामी गरीब लोगों में से 836 मिलियन लोग ऐसे घरों में रहते हैं जहां किसी भी महिला सदस्य ने कम से कम छह साल की स्कूली शिक्षा पूरी नहीं की है।
- इन 836 मिलियन व्यक्तियों में से अधिकांश उप-सहारा अफ्रीका (363 मिलियन) और दक्षिण एशिया (350 मिलियन) में रहते हैं।
- इनमें से 500 मिलियन से अधिक व्यक्ति सात देशों में रहते हैं: भारत (227 मिलियन), पाकिस्तान (71 मिलियन), इथियोपिया (59 मिलियन), नाइजीरिया (54 मिलियन), चीन (32 मिलियन), बांग्लादेश (30 मिलियन), और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (27 मिलियन)।
- लगभग 16 मिलियन बहुआयामी गरीब पुरुष और बच्चे (कुल जनसंख्या का 0.3 प्रतिशत) 10 वर्ष या उससे अधिक उम्र की महिला या लड़की रहित घरों में रहते हैं।
- लगभग 622 मिलियन बहुआयामी गरीब व्यक्ति ऐसे घरों में रहते हैं जहां लिंग की परवाह किए बिना किसी ने भी छह या अधिक वर्षों की स्कूली शिक्षा पूरी नहीं की है।
- बहुआयामी गरीबी में रहने वाले लोगों की सबसे अधिक संख्या वाले शीर्ष पांच देश भारत (381 मिलियन), नाइजीरिया (93 मिलियन), पाकिस्तान (83 मिलियन), इथियोपिया (77 मिलियन), और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (56 मिलियन) हैं।)

- अध्ययन किए गए 109 देशों में रहने वाले 5.9 अरब लोगों में से 1.3 अरब लोग बहुआयामी गरीबी का अनुभव करते हैं।
- वैश्विक बहुआयामी गरीब व्यक्तियों में से आधे बच्चे हैं।
- 108 देशों में, 207 मिलियन बहुआयामी गरीब लोग महिला प्रधान घरों में रहते हैं।
- भारत में इन परिवारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जबकि कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, इथियोपिया, नाइजीरिया, पाकिस्तान और युगांडा में सामूहिक रूप से एक और महत्वपूर्ण हिस्सा रहता है।

भारत के प्रयास

- नीति आयोग बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) पैरामीटर डैशबोर्ड और स्टेट रिफार्म एक्शन प्लान (एसआरएपी) को अंतिम रूप दे रहा है।
- वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक के निगरानी तंत्र का उपयोग नीति आयोग द्वारा किया जाएगा।
- नीति आयोग भारत में एमपीआई के लिए नोडल एजेंसी है।
- ग्लोबल एमपीआई 29 चुनिंदा वैश्विक सूचकांकों में प्रदर्शन की निगरानी करने की भारत सरकार की पहल का हिस्सा है।
- "सुधार और विकास को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक सूचकांक (जीआईआरजी)" अभ्यास का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक मापदंडों पर भारत के प्रदर्शन को मापना और निगरानी करना है।
- यह अभ्यास आत्म-सुधार, नीति सुधार और सरकारी योजनाओं के बेहतर कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करता है।

अत्यधिक वर्षा की घटना

संदर्भ: वर्तमान में, उत्तरी भारत मानसून के मौसममें भारी वर्षा का सामना कर रहा है।

अत्यधिक भारी वर्षा की घटना क्या है?

- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, 24 घंटे की समय सीमा के भीतर 205 मिमी से अधिक वर्षा की घटना को अत्यधिक भारी वर्षा की घटना माना जाता है।
- भारत में मानसून के मौसम के दौरान ऐसी घटनाएं असामान्य नहीं हैं।
- 2013 में विनाशकारी उत्तराखंड त्रासदी के बाद से, हर साल अत्यधिक वर्षा की घटना के कारण कम से कम एक बड़ी आपदा जैसी स्थिति उत्पन्न हुई है।

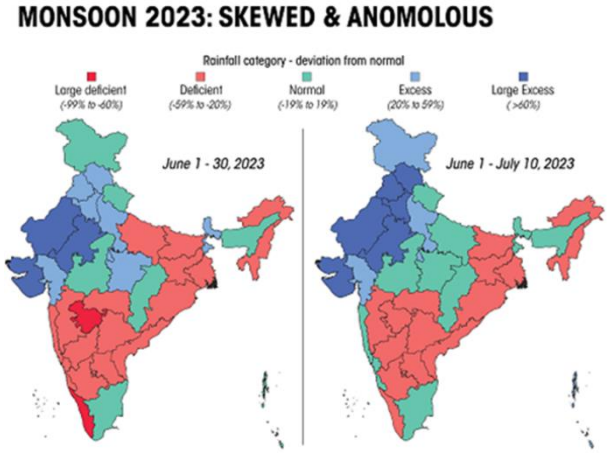

2023 में असामान्य मानसून वर्षा

- **पूर्वानुमान** : इस साल मानसून सीजन में शुरुआत में औसत से कम बारिश होने का अनुमान लगाया गया था।
- **अधिक वर्षा**: हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश सहित उत्तर भारत के कई राज्यों में सामान्य से 26% अधिक वर्षा हुई है।

अत्यधिक वर्षा के कारण

- **बिपरजॉय चक्रवात:** बिपरजॉय चक्रवात के कारण भारी वर्षा हो रही है जिससे जून के अंत तक प्रारंभिक मानसून वर्षा की कमी में 50% से 80 % तक कमी आई है।
- **पश्चिमी विक्षोभ:** मानसूनी हवाओं और पश्चिमी विक्षोभ के बीच परस्पर क्रिया उत्तर भारत में एकत्रित हुई, जिससे तीव्र वर्षा हुई।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन से मानसून के मौसम के दौरान भारी वर्षा सहित चरम मौसम की घटनाओं की संभावना, आवृत्ति और तीव्रता बढ़ जाती है।
- **अरब सागर का गर्म होना**: जनवरी के बाद से अरब सागर लगभग 1.5 डिग्री सेल्सियस गर्म हो गया है, जिससे उत्तर पश्चिम भारत में अधिक वर्षा के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई हैं।

आईएमडी के अनुसार वर्षा वितरण श्रेणियां

- **सामान्य/लगभग सामान्य:** वर्षा एलपीए के +/-10% (एलपीए का 96-104%) के भीतर है।
- **सामान्य से कम:** वर्षा एलपीए के 90-96% से कम है।
- **सामान्य से ऊपर:** वर्षा एलपीए का 104-110% है।
- **कमी:** वर्षा एलपीए के 90% से कम है।
- **अधिकता:** वर्षा एलपीए का 110% से अधिक है।

समर्थ योजना

संदर्भ: इस योजना के फंडिंग पैटर्न को संशोधित किया गया है, जिससे लागत मानदंड 5% बढ़ गया है। यह परिवर्तन इस योजना के तहत कौशल विकास में भाग लेने वाले उद्योगों को आवश्यक अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।

- कपड़ा क्षेत्र में क्षमता निर्माण योजना (समर्थ) कपड़ा उद्योग पर केंद्रित एक व्यापक कौशल विकास कार्यक्रम है।
- SAMARTH मांग संचालित और प्लेसमेंट उन्मुख कार्यक्रम है, जिसका लक्ष्य संगठित क्षेत्र में कपड़ा और संबंधित क्षेत्रों में रोजगार सृजन की सुविधा प्रदान करना है।
- इसमें कताई और बुनाई को छोड़कर, वस्त्रों की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला शामिल है।
- यह योजना रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए उद्योग के प्रयासों को प्रोत्साहित और समर्थन करती है।
- प्रवेश स्तर के कौशल के साथ-साथ, समर्थ में अपस्किलिंग और री-स्किलिंग कार्यक्रमों के प्रावधान भी शामिल हैं।
- अपस्किलिंग/री-स्किलिंग कार्यक्रमों का लक्ष्य परिधान और परिधान क्षेत्र में मौजूदा श्रमिकों की उत्पादकता को बढ़ाना है।
- समर्थ को मार्च 2024 तक लागू किया जाएगा।
- **नोडल मंत्रालय:** कपड़ा मंत्रालय
- **कार्यान्वयन एजेंसियां:** इस योजना के तहत कौशल विकास कार्यक्रम निम्नलिखित संस्थाओं के माध्यम से चलाया जाता है:
    - कपड़ा उद्योग।
    - कपड़ा मंत्रालय/राज्य सरकारों के संस्थान/संगठन जिनके पास प्रशिक्षण बुनियादी ढांचा है और जिन्होंने कपड़ा उद्योग के साथ प्लेसमेंट टाई-अप स्थापित किया है।
    - कपड़ा क्षेत्र में कार्यरत प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संसथा/एनजीओ/सोसायटी/ट्रस्ट/संगठन/कंपनियां/स्टार्ट-अप/उद्यमी, जिनका कपड़ा उद्योग के साथ प्लेसमेंट समझौता है।

कपड़ा क्षेत्र के लिए अन्य योजनाएँ

- **इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल पार्क (एसआईटीपी) के लिए योजना:** 2005 में शुरू की गई यह योजना कपड़ा उद्योग को अपनी कपड़ा इकाइयां स्थापित करने के लिए अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा सुविधाएं प्रदान करने पर केंद्रित है।
- **पावर-टेक्स इंडिया: यह** पावरलूम क्षेत्र के विकास के लिए बनाई गई एक व्यापक योजना है , यह कपडा क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताओं और जरूरतों को संबोधित करती है।
- **रेशम समग्र योजना:** इस योजना का उद्देश्य आयातित रेशम पर निर्भरता को कम करके घरेलू रेशम उत्पादन की गुणवत्ता और उत्पादकता को बढ़ाना है।
- **संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना (एटीयूएफएस):** यह एक क्रेडिट-लिंक्ड पूंजी निवेश सब्सिडी (सीआईएस) योजना है जिसका उद्देश्य कपड़ा उद्योग में प्रौद्योगिकी उन्नयन और आधुनिकीकरण को बढ़ावा देना है।
- **राष्ट्रीय हथकरघा दिवस** : हर साल 7 अगस्त को मनाया जाने वाला यह दिन भारत में हथकरघा बुनाई समुदाय के महत्व को संदर्भित करता है।
- **राष्ट्रीय तकनीकी कपड़ा मिशन** : यह मिशन 2024 तक घरेलू कपडा बाजार के आकार को 40 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़ाकर 50 बिलियन अमरीकी डालर तक के लक्ष्य के साथ, तकनीकी वस्त्र के क्षेत्र में भारत को वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है।

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

13 July 2023

NEWS IN BETWEEN THE LINES

दुधवा टाइगर रिजर्व

सन्दर्भ : हाल ही में, उत्तर प्रदेश के दुधवा टाइगर रिजर्व में चार बाघों की शव परीक्षण रिपोर्ट से पता चला कि उनकी मौत आपसी लड़ाई और संक्रमण के कारण हुई थी।

दुधवा टाइगर रिजर्व:

- दुधवा टाइगर रिजर्व भारत के उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले में स्थित एक संरक्षित क्षेत्र और वन्यजीव अभयारण्य है।
- यह देश के सबसे प्रमुख बाघ अभ्यारण्यों में से एक है और दुधवा राष्ट्रीय उद्यान का हिस्सा है
- इसे 1965 में वन्यजीव अभयारण्य, 1977 में राष्ट्रीय उद्यान और 1987-88 में टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था।
- इस रिज़र्व में 1984 में एक-सींग वाले गैंडे को सफलतापूर्वक पुनः प्रतिस्थापित किया गया।
- यह तराई आर्क लैंडस्केप (टीएएल) का हिस्सा है, जिसमें नेपाल और भारत के 14 संरक्षित क्षेत्र शामिल हैं।

जैव विविधता: यह बाघ, तेंदुए, हिरण, बंगाल फ्लोरिकन और हिस्पिड खरगोश जैसी दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों का घर है।

प्रोजेक्ट टाइगर:

- दुधवा टाइगर रिजर्व पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की प्रोजेक्ट टाइगर पहल का हिस्सा है।
- 2014 के बाद से भारत की बाघों की आबादी में 33% की वृद्धि हुई है, जिसमें आधे से अधिक बाघ मध्य प्रदेश और कर्नाटक में पाए जाते हैं।

एंथ्रोपोसीन युग

सन्दर्भ : हाल ही में, वैज्ञानिकों ने घोषणा की कि कनाडा के ओन्टारियो में क्रॉफर्ड झील के तलछट में एंथ्रोपोसीन युग की शुरुआत के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

परिभाषा और उत्पत्ति:

- **एंथ्रोपोसीन युग** भूगर्भिक समय का अनौपचारिक अंतराल, जो चतुर्धातुक काल (2.6 मिलियन वर्ष पहले से वर्तमान तक) का तीसरा विश्वव्यापी विभाजन को दर्शाता है,जो पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र पर महत्वपूर्ण मानव प्रभाव की विशेषता है।
- 2000 में पॉल क्रुट्ज़न और यूजीन स्टोएमर द्वारा गढ़ा गया, यह औद्योगिक क्रांति के बाद से मानवीय गतिविधियों के कारण हुए आमूल-चूल परिवर्तनों की अवधि को चिह्नित करता है।

निर्धारित समय - सीमा: एंथ्रोपोसीन वर्किंग ग्रुप ने मानव-प्रेरित गिरावट से तलछट पर पड़ने वाले विश्लेषण के आधार पर, 1950 और 1954 के बीच इसकी शुरुआत का अनुमान लगाया है।

पर्यावरणीय परिवर्तन:

- एंथ्रोपोसीन युग पर्यावरण में विभिन्न हानिकारक परिवर्तनों से जुड़ा है।
- इनमें ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र के स्तर में वृद्धि, समुद्र का अम्लीकरण, बड़े पैमाने पर मिट्टी का क्षरण, और जीवमंडल की गिरावट शामिल है।

मानवीय प्रभाव:

- मानव गतिविधियाँ, जैसे जीवाश्म ईंधन जलाना, परमाणु हथियार परीक्षण और प्रदूषण, एंथ्रोपोसीन युग में प्रमुख योगदानकर्ता रहे हैं।
- यह युग आगे की पारिस्थितिक क्षति को कम करने के लिए टिकाऊ प्रथाओं और पर्यावरणीय प्रबंधन की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप

सन्दर्भ : हाल ही में, जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) ने अपना पहला विज्ञान जन्मदिन मनाया, जो परिचालन उपयोग के लिए खगोलविदों को सौंपे जाने के एक साल बाद मनाया गया।

जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप: जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST), जिसे आमतौर पर वेब टेलीस्कोप के नाम से जाना जाता है, एक अंतरिक्ष वेधशाला है जिसे नासा द्वारा अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के सहयोग से लॉन्च किया जाना है।

जेम्स ई. वेब के नाम पर रखा गया: दूरबीन का नाम जेम्स ई. वेब के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने 1961 से 1968 तक नासा के प्रशासक के रूप में कार्य किया और अपोलो कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन्फ्रारेड अवलोकन: वेब टेलीस्कोप की प्रमुख विशेषताओं में से एक इन्फ्रारेड रेंज में ब्रह्मांड में वस्तुओं का निरीक्षण करने की क्षमता है, जो इसे दूर की आकाशगंगाओं, सितारों और ग्रहों का अध्ययन करने की अनुमति देती है।

उद्देश्य और उपलब्धियाँ:

- जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप का लक्ष्य ब्रह्मांड के सबसे पुराने तारों का अध्ययन करना है, जिससे 13.5 अरब साल से भी पहले उनके गठन का पता लगाया जा सके।
- दूरबीन तारा निर्माण प्रक्रियाओं और ग्रह निर्माण की भी जांच करता है।

साल्सोला ओपोसिटिफोलिया डेसफोंटानी

सन्दर्भ : हाल ही में, गुजरात इकोलॉजिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (जीईईआर) फाउंडेशन के शोधकर्ताओं द्वारा साल्सोला ओपोसिटिफोलिया डेसफोंटानी नामक एक नई पौधे की प्रजाति की खोज की गई।

वर्गीकरण और परिवार: साल्सोला ओपोसिटिफोलिया डेसफोंटानी अमरेंथेसी परिवार से संबंधित है।

विशेषताएं और आवास:

- यह एक बारहमासी झाड़ी है जो खारे, शुष्क से लेकर अर्ध-शुष्क वातावरण में पनपती है।
- चिकनी, बेलनाकार, लकड़ी के आधार वाली रसीली झाड़ी एक से दो मीटर की ऊंचाई तक पहुंच सकती है।
- पौधे की पत्तियाँ तने पर एक दूसरे के विपरीत बढ़ती हैं।

वितरण:

- इसका विस्तार पहले इटली, उत्तरी अफ्रीका, फ़िलिस्तीन, स्पेन और पश्चिमी सहारा में ज्ञात था।
- इस प्रजाति की रिपोर्ट भारत में पहली बार खादिर बेट, कच्छ, गुजरात के संग्रह के आधार पर की गई थी।

भारत में साल्सोला जीनस:

- साल्सोला ओपोसिटिफोलिया डेसफोंटानी भारत में खोजी गई साल्सोला जीनस की छठी प्रजाति है।
- अन्य रिकॉर्ड की गई प्रजातियों में साल्सोला काली, साल्सोला हतमानी, साल्सोला मोनोप्टेरा, कैरोक्सिलॉन इम्ब्रिकैटम (सालसोला बैरीओस्मा), और हैलोगेटन ग्लोमेरेटस (सालसोला ग्लोमेरेटा) शामिल हैं।

अनुप्रयोग:

- साल्सोला ओपोसिटिफ़ोलिया का उपयोग सोडा ऐश उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में किया जाता है।
- अन्य साल्सोला प्रजातियों का उपयोग लाइ और साबुन के निर्माण में किया जाता है।
- शोध से पता चलता है कि इस जीनस की प्रजातियों में औषधीय गुण होते हैं।

स्वास्थ्य एटीएम/हेल्थ एटीएम

सन्दर्भ : हाल ही में, उत्तर प्रदेश सरकार ने लोगों को तत्काल स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए राज्य भर में हेल्थ एटीएम स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है।

हेल्थ एटीएम के बारे में:

- **हेल्थ एटीएम,** जिसे हेल्थ ऑटोमेटेड टेलर मशीन के रूप में भी जाना जाता है, एक नवीन स्वास्थ्य देखभाल तकनीक है जो व्यक्तियों को तत्काल और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती है।
- **त्वरित रोग परीक्षण**: स्वास्थ्य एटीएम 30 से अधिक बीमारियों के लिए तुरंत परीक्षण करते हैं, प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्ता मुद्रित रिपोर्ट प्रदान करते हैं या उन्हें व्हाट्सएप, ईमेल या एसएमएस के माध्यम से साझा करते हैं।
- **हेल्थकेयर गैप को पाटना**: हेल्थ एटीएम प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे में अंतर को भरने, अस्पतालों पर भार को कम करने और समुदायों के करीब स्वास्थ्य देखभाल पहुंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **एमओयू के तहत विस्तार:** स्वास्थ्य देखभाल की पहुंच को बढ़ाने के लिए उत्तर प्रदेश में सामुदायिक और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर 4,600 स्वास्थ्य एटीएम स्थापित करने के लिए इंडिया हेल्थ लिंक के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- **वित्तीय सहायता**: वायबिलिटी गैप फंडिंग (वीजीएफ) योजना के तहत, केंद्र सरकार 1,525 करोड़ रुपये प्रदान करेगी।

समाचार में स्थान

स्वीडन

सन्दर्भ : हाल ही में, स्वीडन के नाटो सदस्यता अनुरोध को तुर्की और हंगरी की लंबित मंजूरी के कारण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है, जबकि फिनलैंड पहले ही गठबंधन में शामिल हो चुका है।

भौगोलिक स्थिति: स्वीडन उत्तरी यूरोप में स्थित है और इसकी सीमा पश्चिम में नॉर्वे और पूर्व में फिनलैंड से लगती है।

भौगोलिक विशेषताएं: स्वीडन एक स्कैंडिनेवियाई देश है जो अपने हजारों तटीय द्वीपों, अंतर्देशीय झीलों, बोरियल जंगलों और हिमाच्छादित पहाड़ों के लिए जाना जाता है। राजधानी स्टॉकहोम 14 द्वीपों पर बना है।

मुद्रा: स्वीडन की आधिकारिक मुद्रा स्वीडिश क्रोना (SEK) है।

भाषा: स्वीडन की आधिकारिक भाषा स्वीडिश है।

नाटो सदस्यता अनुरोध: स्वीडन ने नाटो में शामिल होने में अपनी रुचि व्यक्त की है, लेकिन उसके अनुरोध को बाधाओं का सामना करना पड़ा है क्योंकि तुर्की और हंगरी से अनुमोदन अभी भी लंबित है।

फ़िनलैंड की नाटो सदस्यता: इससे पहले, एक अन्य स्कैंडिनेवियाई देश फ़िनलैंड, नाटो का सदस्य बन गया था।

उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो): नाटो 1949 में स्थापित एक अंतरसरकारी सैन्य गठबंधन है, जिसका मुख्यालय ब्रुसेल्स में स्थित है। इसमें 31 सदस्य देश शामिल हैं, जिनमें 29 यूरोपीय देश और दो उत्तरी अमेरिकी देश शामिल हैं।